पंजाव प्रान्त में जालन्धर जिले के गंगापुर नामक ग्राम में पण्डित नारायण दत्त जी रहा करते थे। इनके दो पुत्र थे बड़े का नाम धर्मदास तथा छोटे का नाम बृजलाल था। पण्डित जी के छोटे पुत्र बृजलाल ही आगे चलकर व्याकरण के सूर्य, अनुपम तपस्वी, अद्‌भुत तार्किक तथा भारत के भाग्य-विधाता एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के गुरू दण्डी स्वामी विरजानन्द जी के रूप में सुविख्यात हुए। महर्षि जी ने सन् 1875 में अपने पूणे प्रवचन में कहा था कि जब वे अपने गुरू से मिले तो उस समय उनकी अवस्था 81 वर्ष की थी इसी आधार पर उनका जन्म सन् 1779 सुनिश्चित होता है। मात्र पांच वर्ष की आयु में ही शीतला के प्रकोप के कारण बृजलाल की दोनों आँखों की दृष्टि जाती रही तथा बारह वर्ष अल्पायु में ही वह माँ-बाप की छत्र-छाया से वंचित हो गया। भाई-भाभी को बृजलाल बोझ लगने लगा और उनके दुर्व्यवहार से इस अन्धे बालक को गृह-त्याग करना पड़ा। अन्ततः अढ़ाई वर्ष की लम्बी पद-यात्रा के बाद बृजलाल ऋषिकेश पहुँचा और वहाँ पर आठ वर्ष की आयु में अपने पिता द्वारा दी गई गायत्री-दीक्षा के आधार पर तीन वर्ष तक घोर तपस्या की। आमतौर पर लोग ईश्वरीय-व्यवस्था एवं सृष्टि-नियमानुकूल दण्डी स्वामी गुरू विरजानन्द जी वास्तव में ही किसी चमत्कार से कम नहीं। बालक बृजलाल की आँखों की भौतिक-दृष्टि तो चली गई थी मगर उसके अन्तर्चक्षु खुल गए जिससे उन्हें आध्यात्मिक दृष्टि प्राप्त हुई। उनकी स्मृति अत्यन्त कुशाग्र थी तथा इन्हें सुनी हुई विद्या शीघ्र ही कंठस्थ हो जाती थी इसीलिए लोग उन्हें प्रज्ञाचक्षु कहा करते थे।

सन् 1797 में बालक बृजलाल ने हरिद्वार में स्वामी सम्पूर्णानन्द